अध्याय -08

निर्माण उद्योग

विनिर्माण उद्योग

- **विनिर्माण उद्योग**
  - कच्चे माल को तैयार माल में परिवर्तित कर, नए वस्तु बनाने की क्रिया विनिर्माण उद्योग कहलाती है | जैसे - कपास से कपडा, लुगदी से कागज, खनिज तेल से रासायनिक पदार्थ एवं लौह-अयस्क से लोहा इस्पात आदि | इसका कुल राष्ट्रीय आय में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है | इसके निम्न प्रकार हैं :-
- **विनिर्माण उद्योग**
  - आकर, पूंजी-निवेश और श्रम-शक्ति के आधार
    - वृहत उद्योग
    - मध्यम उद्योग
    - लघु उद्योग
    - कुटीर उद्योग
  - स्वामित्व के आधार पर
    - सार्वजनिक उद्योग
    - व्यक्तिगत उद्योग
    - मिश्रित उद्योग
    - सहकारी उद्योग
  - उत्पादों के उपयोग के आधार
    - मूल पदार्थ उद्योग
    - पूंजीगत पदार्थ उद्योग
    - मध्यवर्ती पदार्थ उद्योग
    - उपभोक्ता पदार्थ उद्योग
  - कच्चे माल के आधार पर
    - उधोगो द्वारा निर्मित कच्चा माल आधारित
    - वन आधारित
    - खनिज आधारित
    - कृषि आधारित

निर्मित पदार्थो के प्रकृति आधारित कुल 8 प्रकार के उद्योग हैं, निम्न इस प्रकार हैं :-

- धातुकर्म उद्योग
- यांत्रिकी इंजीनियरी उद्योग
- रासायनिक और सम्बद्ध उद्योग
- वस्त्र उद्योग
- खाद्य उद्योग
- विधुत उत्पादन उद्योग
- इलेक्ट्रोनिक उद्योग
- संचार उद्योग

© JCERT not to be republished

विनिर्माण उद्योग

उद्योगों की अवस्थिति

उद्योगों की अवस्थिति के प्रमुख कारक निम्न हैं

- कच्चा माल
- शक्ति के साधन
- बाजार
- परिवहन
- श्रम
- एतिहासिक कारक
- औधोगिक नीति

भारत में किसी प्रदेश के उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाले कारक

कच्चे माल की उपलब्धता:- सामान्यता उद्योग वहीं स्थापित होते है जहाँ कच्चा माल उपलब्ध होता है। जिन उद्योगों में निर्मित वस्तुओं का भार कच्चे माल के समीप लगाए जाते हैं।

शक्ति के साधन:- किसी भी उद्योग की स्थापना से पहले उसकी शक्ति की आपूर्ति सुनिश्चित कर ली जाती है। एल्युमिनियम उद्योग शक्ति के साधन के नजदीक लगाए जाते हैं क्योंकि इसमें मशीनों को संचालित करने के बिजली का बहुत अधिक उपयोग किया जाता है।

परिवहन:- कच्चे माल को उद्योग केन्द्र तक लाने तथा निर्मित माल को बाजार तक ले जाने के लिए सस्ते तथा कुशल यातायात का प्रचुर मात्रा में होना आवश्यक हैं।

बाजार:- उद्योगों का सारा विकास निर्मित माल की खपत के बाजर पर निर्भर करता है। बाजार की निकटता से उपभोक्ता को औद्योगिक उत्पाद सस्ते दाम पर मिल जाते हैं।

श्रम :- सस्ते तथा कुशल श्रम की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता औद्योगिक विकास का मुख्य कारण है। कुछ उद्योग तो श्रम प्रधान ही होते हैं। इन्हें विशेष दक्षता वाले श्रमिकों की आवश्यकता होती हैं जैसे फिरोजाबाद का चूड़ी उद्योग श्रम प्रधान उद्योग है।

ऐतिहासिक कारक :- मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे केन्द्रों का औपनिवेशिक काल में ही विकास हो गया था मुर्शिदाबाद, भदोही, सूरत, बड़ौदा, प्राचीन समय से ही औद्योगिक केन्द्र के रूप में उभर आये थे।

औधोगिक नीति :- भारत एक प्रजातान्त्रिक देश होने के करण यह आवश्यक है की सरकार की नीति भी उद्योगों के अवस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए।

© JCERT not to be republished

भारत में किसी प्रदेश के उद्योगों की स्थिति को प्रभावित करने वाले कारक :-

कच्चे माल की उपलब्धता :- सामान्यता उद्योग वहीं स्थापित होते है जहाँ कच्चा माल उपलब्ध होता है। जिन उद्योगों में निर्मित वस्तुओं का भार कच्चे माल के समीप लगाए जाते हैं।

शक्ति के साधन :- किसी भी उद्योग की स्थापना से पहले उसकी शक्ति की आपूर्ति सुनिश्चित कर ली जाती है। एल्युमिनियम उद्योग शक्ति के साधन के नजदीक लगाए जाते हैं क्योंकि इसमें मशीनों को संचालित करने के बिजली का बहुत अधिक उपयोग किया जाता है।

परिवहन :- कच्चे माल को उद्योग केन्द्र तक लाने तथा निर्मित माल को बाजार तक ले जाने के लिए सस्ते तथा कुशल यातायात का प्रचुर मात्रा में होना आवश्यक हैं।

बाजार :- उद्योगों का सारा विकास निर्मित माल की खपत के बाजर पर निर्भर करता है। बाजार की निकटता से उपभोक्ता को औद्योगिक उत्पाद सस्ते दाम पर मिल जाते हैं।

श्रम :- सस्ते तथा कुशल श्रम की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता औद्योगिक विकास का मुख्य कारण है। कुछ उद्योग तो श्रम प्रधान ही होते हैं। इन्हें विशेष दक्षता वाले श्रमिकों की आवश्यकता होती हैं जैसे फिरोजाबाद का चूड़ी उद्योग श्रम प्रधान उद्योग है।

ऐतिहासिक कारक :- मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे केन्द्रों का औपनिवेशिक काल में ही विकास हो गया था मुर्शिदाबाद, भदोही, सूरत, बड़ौदा, प्राचीन समय से ही औद्योगिक केन्द्र के रूप में उभर आये थे।

औधोगिक नीति :- भारत एक प्रजातान्त्रिक देश होने के करण यह आवश्यक है की सरकार की नीति भी उद्योगों के अवस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए।

किसी भी देश के औद्योगिक विकास के लिए लौह — इस्पात उद्योग एक मूल आधार होता है। सूती वस्त्र उद्योग हमारे परंपरागत उद्योगों में से एक है। चीनी उद्योग स्थानिक कच्चे माल पर आधारित है जो कि अंग्रेजों के समय में भी फला फूला। तथा पेट्रोलियम रासायनिक उद्योग (Petrochemical Industry) और अवगम प्रौद्योगिकी उद्योग (IT Industry) भी एक मुख्य उद्योग है।

© JCERT not to be republished

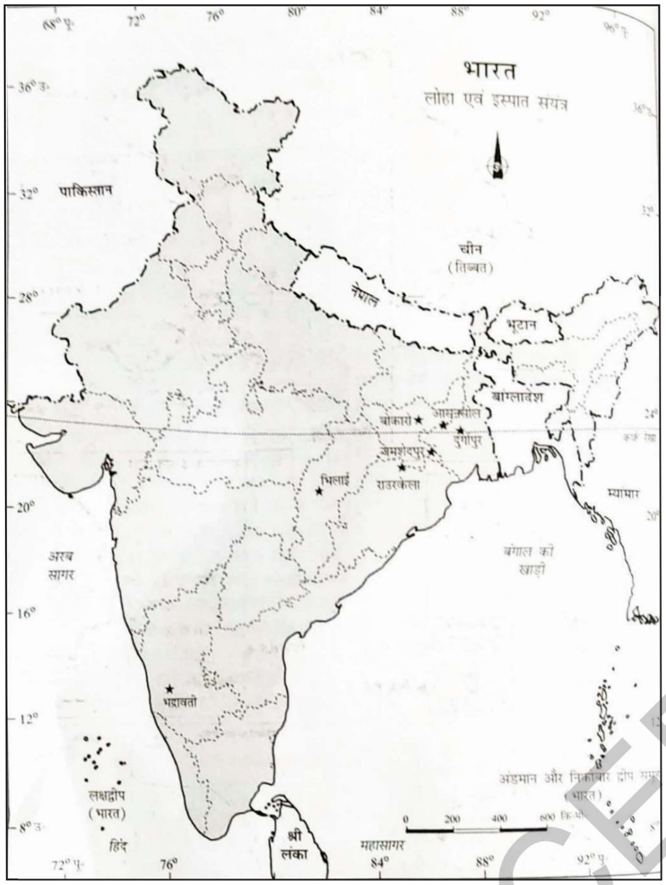

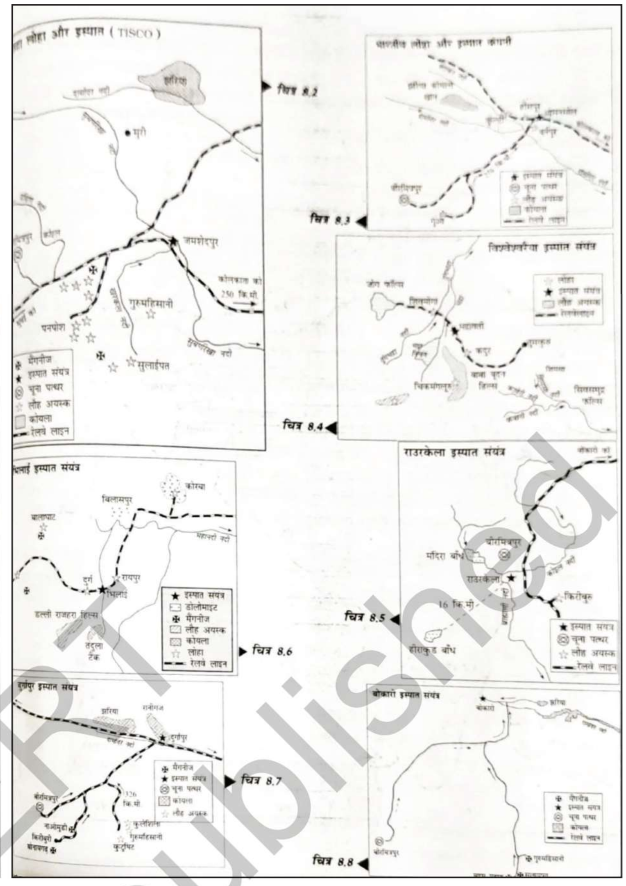

भारत – लोहा एवं इस्पात संयंत्र

मुख्य उद्योग :

- लौह इस्पात उद्योग
- सूती वस्त्र उद्योग
- चीनी उद्योग
- पेट्रो रसायन उद्योग
- ज्ञान आधारित उद्योग
- एकीकृत इस्पात उद्योग

लौह इस्पात उद्योग:– लौह इस्पात उद्योग के विकास ने भारत में तीव्र औद्योगिक विकास के दरवाजे खोल दिए। भारतीय उद्योग के सभी सेक्टर अपनी मूल आधारिक अवसंरचना के लिए मुख्य रूप से लोहा इस्पात उद्योग पर निर्भर करते हैं।

© JCERT not to be republished

लौह इस्पात उद्योग के लिए लौह अयस्क और कोककारी कोयला के अतिरिक्त चूना पत्थर, डोलोमाईट, मैंगनीज आदि कच्चे माल की आवश्यकता होती है।

ये सभी कच्चे माल भार ह्रास वाले होते हैं, इसलिए लोहा — इस्पात उद्योग की सबसे अच्छी स्थिति कच्चे माल के स्त्रोतों के निकट होती है।

भारत में छत्तीसगढ़, उत्तरी ओड़िसा, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल के भाग उच्च कोटि के लौह अयस्क, अच्छी गुणवत्ता वाले कोककारी कोयले और अन्य खनिजों में समृद्ध हैं।

भारत के प्रमुख इस्पात कारखाने :-

- टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (TISCO)
- इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (IISCO)
- विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (VISW)
- राउरकेला स्टील प्लाण्ट
- भिलाई स्टील प्लाण्ट
- दुर्गापुर स्टील प्लाण्ट
- बोकारो स्टील प्लाण्ट
- अन्य इस्पात संयंत्र

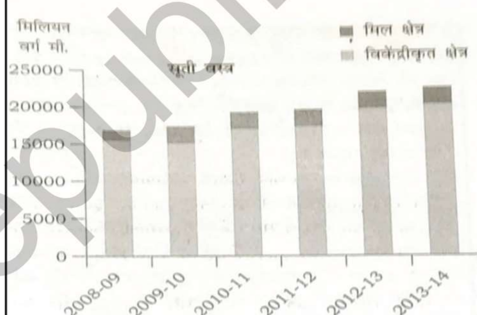

स्रोत: वार्षिक रिपोर्ट 2013-14, CITI

चित्र 8.10 : सूती वस्त्रों का उत्पादन

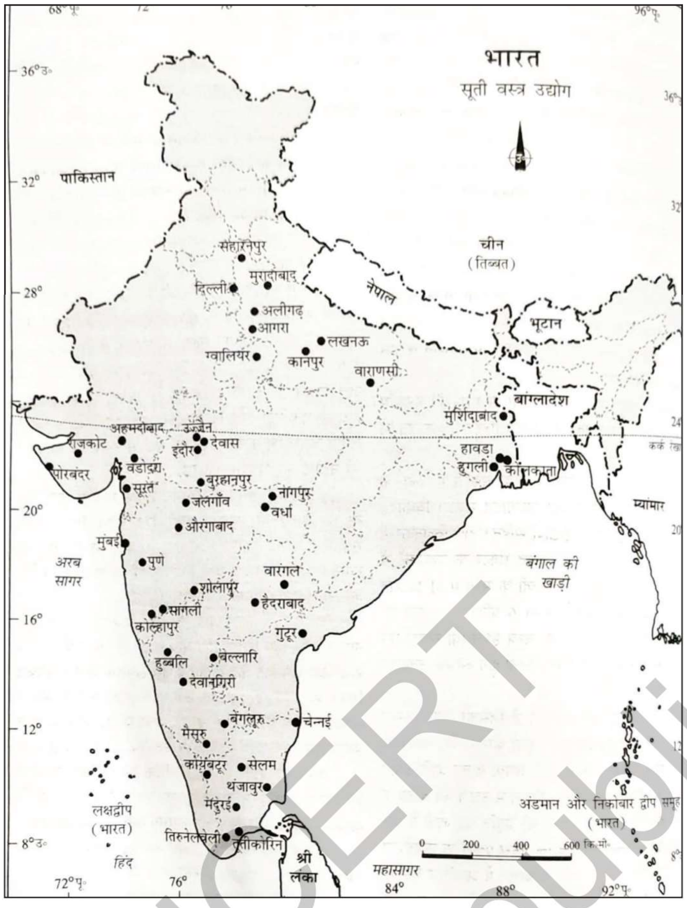

भारत - सूती वस्त्र उधोग

सूती वस्त्र उद्योग :-

यह उद्योग भारत के परम्परागत उद्योगों में से एक है। इसे औधोगीकरण का इंजन या भारत का मात्री भी कहा जाता है।

यह प्राचीन और मध्य काल में केवल एक कुटीर उद्योग के रूप में ही थे, किन्तु बाद में भारत का उत्कृष्ट कोटि का मलमल, कैलिको, छींट और अन्य प्रकार की उच्च गुणवत्ता वाले सूती कपड़ो के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।

भारत में इसका विकास का मुख्य कारण उष्णकटिबंधीय गर्म और आर्द जलवायु का पाया जाना है।

प्रारंभ में, अंग्रेजो ने स्वदेशी सूती वस्त्र के विकास को प्रोत्साहित नहीं किया। वे कपास को मानचेस्टर और लिवरपूल स्थित अपनी मीलों के लिए निर्यात कर देते थे और वहां तैयार माल को बेचने के लिए भारत ले आते थे। भारत के उत्पाद के तुलना में ये सस्ते होते थे।

© JCERT not to be republished

1854 में पहली आखुनिक सूती मिल की स्थापना मुंबई में की गई, जो गुजरात और महारास्ट्र के कपास उत्पादक क्षेत्रो के काफी निकट थे।

कच्ची कपास इंग्लैण्ड को निर्यात करने के लिए मुंबई पत्तन तक लाई जाती थी। इसीलिए कपास स्वयं मुंबई

नगर में उपलब्ध थी। इसके अलावे यह वित्तीय केंद्र भी था, जो उद्योग को प्रारंभ करने के लिए पूंजी उपलब्ध करने में सक्षम था। 1921 के बाद यहाँ रेलमार्गों के विकास के साथ दूसरे अन्य सूती वस्त्र केन्द्रों का तेजी से विस्तार हुआ। जैसे दक्षिण भारत में, कोयम्बटूर, मदुरै, और बंगलुरु । मध्य भारत में नागपुर, इंदौर, के अलावे शोलापुर और वडोदरा भी इसके केंद्र बन गये।

पत्तन की सुविधा के कारण कोलकाता में भी इसके मिलें लगायी गयी।

भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में जहाँ कहीं अवस्थितिक अनुकूल कारक विधमान थे। सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना की गयी।

वर्तमान में अहमदाबाद, भिवंडी, शोलापुर, कोल्हापुर, नागपुर, उज्जैन सूती वस्त्र उद्योग के मुख्य केंद्र हैं।

महाराष्ट्र, गुजरात, और तमिलनाडु अग्रणी कपास उत्पादक तथा पशिचम बंगाल उतर प्रदेश करनाटक और पंजाब दुसरे महत्वपूर्ण सूती वस्त्र उत्पादक हैं।

तमिलनाडु में सबसे अधिक मिलें हैं और उनमे अधिक कपडा न बनाकर सूत का उत्पादन करती हैं। कोयम्बटूर, जहाँ का महत्वपूर्ण केंद्र है। इसके अतिरिक्त अन्य केंद्र चेन्नई, मदुर, तिरुनलवेली, तूतीकोरिन, थंजावुर रामनाथपुरम और सेलम आदि हैं।

स्वंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से सूती वस्त्र के उत्पादन में लगभग 5 गुनी वृद्धि हुई है सूती कपडे को सिंथेटिक कपड़े प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

चीनी उद्योग :-

- यह देश का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग है।
- भारत विश्व का गन्ना और चीनी दोनों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।
- विश्व के कुल चीनी उत्पादन का 8 प्रतिशत उत्पादन करता है।
- यह उद्योग बहुत अधिक संख्या में लोगों को रोजगार मुहैय्या करने वाला उद्योग के रूप में भी जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

- वर्तमान में इस उद्योग का विकास 1903 में बिहार में चीनी मिल का स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। बाद में बिहार से उतर प्रदेश के और भी फैला। 1950 -51 में 139 कारखाने प्रचलन में थे जो 2011 में बढ़कर 662 हो गयी।

अवस्थिति :- यह एक भारहास फसल है इनमे चीनी और गन्ने का अनुपात 9 - 12 प्रतिशत के बीच है।

इसे काटने के बाद 24 घंटे के अन्दर पर जाना अतिआवश्यक होती है। अतः इसे कारखानों के अधिक निकट ही उगाया जाता है।

महाराष्ट्र देश में अग्रणी चीनी उत्पादक राज्य है जबकि उत्तर प्रदेश का दूसरा स्थान आता है। उतर प्रदेश के गंगा - यमुना दोआब और तराई प्रदेश में चीनी मिलें स्थित हैं।

तमिलनाडु के कोयम्बतूर वेल्लोर तिरुवान्मलाई, विल्लुपुरम और तिरुचिरापल्ली में भी चीनी मिले स्थित है।

पेट्रो रसायन उद्योग :-

उद्योगों का यह वर्ग भारत में तेजी से विद्सित हो रहा है। इसके अंतर्गत कई प्रकार के उद्योग आते है।

1960 में जैव रसायनों की मांग इतनी बढ़ी की इसको पूरा करना कठिन हो गया। उस समय पेट्रोल परिशोधन उद्योग का तेजी से विस्तार हुआ।

अपरिष्कृत पेट्रोल से कई प्रकार की वस्तुएं तैयार की जाती है जो अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराती है। इन्हें ही सामूहिक रूप से पेट्रो रसायन उद्योग कहा जाता है।

पेट्रो रसायन उद्योग के प्रकार :-

इसे चार वर्गो में विभाजित किया जाता है -

1. पोलिमर 2. कृत्रिम रेशा 3. इलेस्टोमर्स 4. पृष्ठ संक्रियक

मुंबई शैल रसायन उद्योग का केंद्र है।

पटाखों का उद्योग औरेया (उतर प्रदेश), जामनगर, गाँधी नगर और हाजीरा (गुजरात), नगथाने, रत्नागिरी महाराष्ट्र हल्दिया (पश्चिम बंगाल) और विशाखापतनम (आन्ध्र प्रदेश) में भी स्थित है।

© JCERT not to be republished

रासायनिक और पेट्रो - रासयनिक विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में इसके अंतर्गत तीन संस्थायें कम कर रही है । पहली, भारतीय पेट्रो - रासयनिक कारपोरेशन लिमिटे (IPCL) - यह सार्वजानिक क्षेत्र के उद्योग, जिसमे पोलिमर, रेशों, और रेशों से बने संक्रियक का निर्माण होता है।

दूसरी, पेट्रोफिल्स कोआपरेटिव लिमिटेड - सहकारी संस्थओं का संयुक्त प्रयास, जिसमे पोलिस्टर तंतु सूत और नायलोन चिप्स का उत्पादन गुजरात स्थित वडोदरा एवं नाल्धारी संयारो में करता है। तीसरा, सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ प्लास्टिक इंजीनियरिंग एंड टेकनोलोजी (CIPET) - यह पेट्रो केमिकल उद्योग में प्रशिक्षण प्रदान करता है।

सार्वजानिक क्षेत्र में मुंबई का पहला रासायनिक उद्योग द नेशनल आर्गेनिक केमिकल इंडस्ट्री लिमिटेड नेपथ पर आधारित था। बाद में कई कम्पनियाँ जैसे मुंबई, बरौनी, मेतुर, पिंपरी और रिसरा में स्थापित की गई। इसके 75 प्रतिशत इकाइयाँ लघु क्षेत्र के सेक्टर में हैं।

© JCERT not to be republished

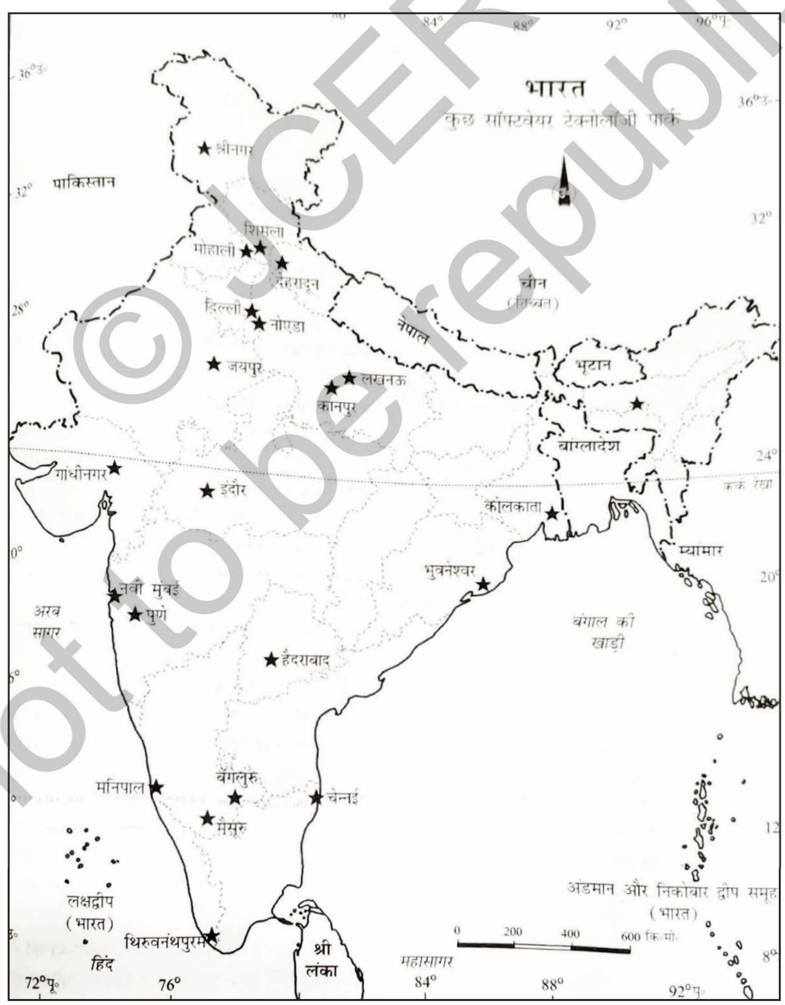

भारत - कुछ सॉफ्टवेयर टेक्नोलोजी पार्क

ज्ञान आधारित उद्योग :-

उपयोग करते हैं अति उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति, वैज्ञानिक, इंजीनियर आदि उत्पादन कार्य में विशिष्ट ज्ञान का। तो इसे ज्ञान आधारित उद्योग कहते है। भारत में सोफ्टवेयर उद्योग को उत्तम उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए असाधरण प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी है।

नई औद्योगिक नीति :-

नई औद्योगिक नीति की घोषणा 1991 में की गई।

नई औधोगिक नीति के प्रमुख उद्देश्य :-

- अब तक प्राप्त किए गए लाभ को बढ़ाना।
- पुरानी औद्योगिक नीति की कमियों को दूर करना।
- उत्पादकता और लाभकारी रोजगार में स्वपोषित वृद्धि को बनाए रखना है।
- अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता प्राप्त करना है।

भारत में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण एवं औधोगिक विकास

नई औधोगिक नीति घोषणा 1991 में की गई। इसके मुख्य उद्देश्य थे - अब तक प्राप्त किये गए लाभ को बढ़ाना, इसमें विकृत अथवा कमियों को दूर करना, उत्पादकता और लाभकारी रोजगार में स्वपोषित वृद्धि को बनाये रखना और अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता प्राप्त करना।

इस नीति के अंतर्गत निम्न उपाय किये गए हैं - 1. औधोगिक लाइसेंस व्यवस्था का समापन, 2. विदेशी तकनिकी का निःशुल्क प्रवेश 3. विदेशी निवेश नीति 4. पूंजी बाज़ार में अभिगम्यता 5. खुला व्यापार 6. प्रावस्थबद्ध निर्माण कार्यकर्म का उन्मूलन 7. औधोगिक अवस्थिति कार्यक्रम का उदारीकरण।

इस नीति के तीन मुख्य लक्ष्य हैं -

उदारीकरण :-

उदारीकरण से अभिप्राय है निजी क्षेत्र से सभी प्रकार के प्रतिबंधों को हटाना ताकि वह क्षेत्र अधिक प्रतिस्पर्धा के योग्य बन सके।

© JCERT not to be republished

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण ने भारत के औद्योगिक विकास में किस प्रकार से सहायता की है :-

विदेशी सहयोग में वृद्धि हुई है । विदेशी निवेश का बड़ा भाग घरेलू उपकरणों, वित्त सेवा, इलेक्ट्रानिक और विद्युत उपकरण तथा खाद्य व दुग्ध उत्पादकों में लगाया जा चुका है । प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप कुछ भारतीय कंपनियों को भी लाभ हुआ है, उनको नई तकनीक में निवेश का अवसर प्राप्त हुआ । इसके फलस्वरूप यह कंपनियाँ अपने उत्पादन में वृद्धि करने में सफल रही । टाटा मोटर, इन्फासिस जैसी कम्पनियों ने विश्वभर में अपनी शाखायें खोली है। छोटे उत्पादकों पर वैश्वीकरण का बुरा प्रभाव पड़ा । वे बड़ी कम्पनियों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकी ।

निजीकरण :-

निजी क्षेत्र में अधिक से अधिक उद्योगों को सम्मिलित करना । सरकार का प्रभुत्व समाप्त करना तथा नए क्षेत्र जैसे खनन, दूरसंचार, मार्ग निर्माण और व्यवस्था को व्यक्तिगत कंपनियों के लिए खोलना ।

वैश्वीकरण :-

इसके द्वारा देश की अर्थव्यवस्था को संसार की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना है । इस प्रक्रिया के अंतर्गत सामान पूँजी सहित सेवाएँ, श्रम और संसाधन एक देश से दूसरे देश को स्वतंत्रतापूर्वक पहुँचाए जा सकते हैं ।

© JCERT not to be republished

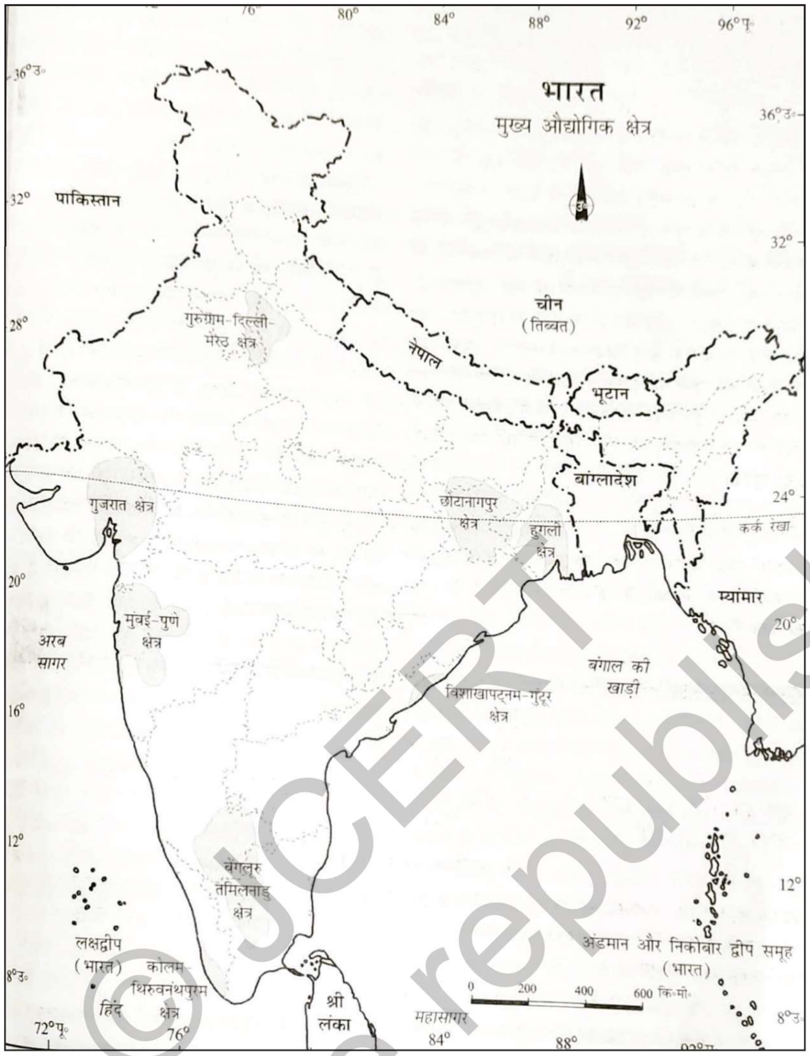

भारत - मुख्य औद्योगिक क्षेत्र

औधोगिक प्रदेश

मुम्बई — पुणे औद्योगिक प्रदेश की प्रमुख विशेषताएं :-

यह प्रदेश मुम्बई : — थाणे से पुणा तथा नासिक और शोलापुर जिलों के समीपवर्ती क्षेत्रों तक विस्तृत है। इस प्रदेश का विकास मुंबई में सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना के साथ प्रारम्भ हुआ। मुम्बई हाई पैट्रोलियम क्षेत्र और नाभिकीय ऊर्जा संयत्र की स्थापना से इस प्रदेश का औद्योगिक तीव्र गति से हुआ। यहाँ अभियान्त्रिकी वस्तुएँ, पैट्रोलियम, परिशोधन पैट्रो — रसायन, चमड़ा, प्लास्टिक वस्तुएँ, दवाएँ, उर्वरक, विद्युत वस्तुएँ, जलयान, निर्माण, सॉफ्टवेयर इत्यादि उद्योगों का विकास हुआ है। इस प्रदेश में मुम्बई, थाणे, ट्राम्बे, पूना, नासिक, मनमाड़, शोलापुर, कोल्हापुर, सतारा तथा सांगली महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र है।

© JCERT not to be republished

गुजरात औद्योगिक प्रदेश की प्रमुख विशेषताएं :-

यह प्रदेश अहमदाबाद एवं बड़ोदरा के बीच स्थित है । यह प्रदेश दक्षिण में बलसाद और सूरत तक या पश्चिम में जामनगर तक फैला । यह प्रदेश की सूती वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण केन्द्र है। सूती वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त पैट्रों, रसायनिक उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग, चीनी उद्योग एवं दवाई उद्योग यहाँ के प्रमुख उद्योग है । इस प्रदेश को कपास उत्पादक क्षेत्र में स्थित होने के कारण कच्चे माल और बाजार दोनों का ही लाभ प्राप्त है । इस प्रदेश के महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र अहमदाबाद, बडोदरा, भरूच कोयली, सूरत बलसाद तथा जामनगर आदि हैं । काँधला बन्दरगाह ने इस औद्योगिक प्रदेश के विकास में तेजी लाने में योगदान किया । कोयली तेल शोधनशाला के का 2. कोलकाता-हुगली औद्योगिक प्रदेश- यह औद्योगिक प्रदेश हुगली नदी के किनारे स्थित है। यहाँ कच्चे माल लोहा, सूर, चाय व अन्य खनिजों की उपलब्धता, ते अधिक प्रर जल व उत्तम बाजार के कारण इस औद्योगिक प्रदेश का विकास इस प्रदेश में जूत्र, भारी इंजीनियरिंग, रसायन, औषधि, रबर, प्लास्टिक, पेट्रोलियम, शोधन, पेट्रो रसायन उपकरण लोह-इस्पात, चमड़ा व जूता निर्माण आदि उद्योग स्थित है। यहाँ बनावा नाईटी कनकीतारा, जगतदल, कृष्णानगर, चुरा, कोलकाता, बज बजे बिरलापुर गाड़ा, खिदरपुर, बाटानगर, हुगली, हल्दिया केन्द्र है।

कोलकाता-हुगली औद्योगिक प्रदेश – यह औद्योगिक प्रदेश हुगली नदी के किनारे स्थित है। यहाँ कच्चे माल लोहा, कोयला, जुट, चाय व अन्य खनिजों की उपलब्धता, सस्ते श्रमिक,प्रचुर जल व उत्तम बाजार के कारण इस औद्योगिक प्रदेश का विकास हुआ है । इस प्रदेश में जूट, भारी इंजीनियरिंग, रसायन, औषधि, रबर, प्लास्टिक, पेट्रोलियम, शोधन, पेट्रो रसायन, विद्युत् उपकरण, लोह-इस्पात, चमड़ा व जूता निर्माण आदि उद्योग स्थित है। यहाँ बन्सबिया, नाईहाट, भाटपारा, कनकीनारा, शामनगर, जगतदल, कृष्णानगर, चुन्चरा, कोलकाता, बज-बज बिरलापुर, हावड़ा, खिदरपुर, बाटानगर, हुगली, हल्दिया केन्द्र है।

अहमदाबाद-बड़ोदरा औद्योगिक प्रदेश – यह प्रदेश गुजरात राज्य के कपास उत्पादक क्षेत्र के निकट है। इस प्रदेश के सहास के मुख्य कारण— पृष्ठ प्रदेश में कपास उपलब्धता, सस्ते श्रमिक, बन्दरगाह सुविधा, पेट्रोलियम उपलब्धता (कियोली से), ताप विद्युत् (ध्रुवरण से), जलविद्युत (उकाई से), परमाणु ऊर्जा (काकाडाथर से) पूँजी (मारवाड़ी उद्योगपति से), खनिज तेल (खम्बात खाड़ी) की उपलब्धता आदि है। यह प्रदेश सुती वस्त्र के अलावा रसायन, इंजीनियरिंग वस्तुओं, औषधियों, पेट्रो रसायन, कृत्रिम रेशा, हीरा तराशने, ऊनी वस्त्र, पेट्रोल शोधन, पेट्रो रसायन, आनन्द डेरी उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। प्रमुख औद्योगिक केन्द्र आनन्द, भावनगर, भरूच, जोधरा, हिम्मतनगर, जामनगर, कालील, खेड़ा, राजकोट, सुरेन्द्रनगर, बलसाड, अंकलेश्वर है।

मदुरै कोयम्बटूर – बंगलौर औद्योगिक प्रदेश- यह प्रदेश तमिलनाडु व कर्नाटक के दक्षिण भाग में प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्र है। यह प्रदेश— सूती वस्त्र, रेशम वस्त्र, चमड़ा, तेल मिल, कॉफी, रसायन, कागज, रबर, सीमेन्ट, चीनी, इंजीनियरिंग, मशीनरी घड़ी निर्माण, दवाई, कांच के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रदेश के औद्योगिक विकास के कारण कृषि, बाजार, सस्ते कुशल श्रमिक, जलवायु, पाइकारा, मेदूर, शिवसमुद्रम से सस्ती विद्युत, खनिज प्राप्ति आदि है। इस प्रदेश में बंगलौर में H.M.T.. हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स, भारत इलैक्ट्रोनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी, कपास, रेशमी, ऊनी वस्त्र, टेलीफोन का निर्माण होता है। चेन्नई, कोयम्बटूर मदुरै, शिवकाशी, मैसूर, तिरुचिरापल्ली, सलेम, माण्ड्या, भद्रावती, डिंडीगुल अन्य औद्योगिक केन्द्र है।

छोटा नागपुर औद्योगिक प्रदेश – इस प्रदेश में जमशेदपुर, बोकारो, दुर्गापुर, आसनसोल, राउरकेला, कुल्टी, बर्नपुर में लोहा इस्पात कारखाने स्थित है। उर्वरक के कारखाने सिंदरी व राउरकेला में रेल इंजन- चितरंजन में, सीमेण्ट खालारी में स्थित है इसके अलावा कागज, दियासलाई चीनी मिट्टी, इंजीनियरिंग, सीमेण्ट, रसायन, कृषि औजार, कांच, फर्नीचर के उद्योग विकसित हुए हैं।

गुड़गाँव-दिल्ली-गाजियाबाद मेरठ औद्योगिक प्रदेश - इस प्रदेश में इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन, कांच, वस्त्र, सिंथेटिक रेशा, रसायन, कृषि उपकरण, साइकिल टायर, होजरी, मोटर वाहन, आर्डिनेंस, शराब, अल्कोहल, चीनी, पीतल, वार्निश पेंट, प्लास्टिक, विद्युत उपकरण, कीटनाशक दवाइयाँ आदि बनाये जाते हैं। इस प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक नगर- गुड़गाँव, दिल्ली, फरीदाबाद, नोएडा, गाजियाबाद, मेरठ, मोदीनगर, मोहन नगर, पानीपत, शाहदरा आदि हैं।

© JCERT not to be republished

अभ्यास

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए।

(i) कौन-सा औद्योगिक अवस्थापना का एक कारण नहीं है?

(क) बाजार (ख) पूँजी (ग) जनसंख्या घनत्व (घ) कर्जा

(ii) भारत में सबसे पहले स्थापित की गई लौह-इस्पात कंपनी निम्नलिखित में से कौन-सी है?

(क) भारतीय लौह एवं इस्पात कंपनी (आई.आई.एस.सी.ओ.)

(ख) टाटा लौह एवं इस्पात कंपनी (टी.आई.एस.सी.ओ.)

(ग) विश्वेश्वरैया लौह तथा इस्पात कारखाना

(घ) मैसूर लोहा तथा इस्पात कारखाना

(iii) मुंबई में सबसे पहला सूती वस्त्र कारखाना स्थापित किया गया, क्योंकिः

(क) मुंबई एक पत्तन है। (ख) मुंबई एक वित्तीय केंद्र था

(ग) यह कपास उत्पादक क्षेत्र के निकट स्थित है। (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) हुगली औद्योगिक प्रदेश का केंद्र है

(क) कोलकाता-हावड़ा (ग) कोलकाता मेदनीपुर

(ख) कोलकाता रिशरा (घ) कोलकाता कोन नगर

(v) निम्नलिखित में से कौन-सा चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है?

(क) महाराष्ट्र (ग) पंजाब

(ख) उत्तर प्रदेश (घ) तमिलनाडु

© JCERT not to be republished

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दें।

(i) लोहा-इस्पात उद्योग किसी देश के औद्योगिक विकास का आधार है , ऐसा क्यों ?

(ii) सूती वस्त्र उद्योग के दो सेक्टरों के नाम बताइए। ये किस प्रकार भिन्न है?

(iii) चीनी उद्योग एक मौसमों उद्योग क्यों है?

(iv) पेट्रो-रासायनिक उद्योग के लिए कच्चा माल क्या है? इस उद्योग के कुछ उत्पादों के नाम बताइये।

(v) भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के प्रमुख प्रभाव क्या है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में दें।

(i) 'स्वदेशी' आंदोलन ने सूती वस्त्र उद्योग को किस प्रकार विशेष प्रोत्साहन दिया?

(ii) आप उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से क्या समझते है? इन्होंने भारत के औद्योगिक विकास में किस प्रकार से सहायता की है?

© JCERT not to be republished